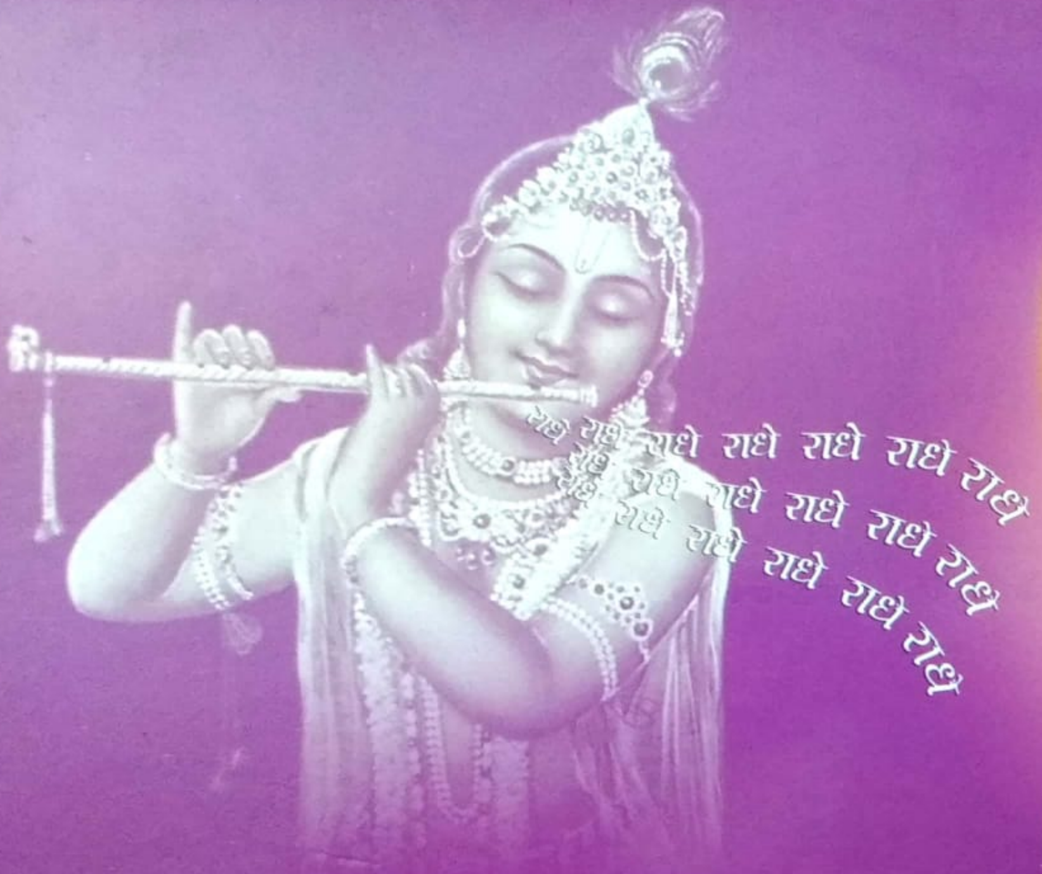

श्री राधा त्रयोदशी

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जगद्गुरु कृपालु परिषत्

श्यामा श्याम धाम
रमन रेती रोड, वृन्दावन-२४ (यू.पी.) इण्डिया
फोन : ०५६५-२५४०५३०

भक्ति धाम, मनगढ़ (कुण्डा)
जिला प्रतापगढ़-१७ (यू.पी.) इण्डिया
फोन : ०५३४१-२३०२८२, २३०४४२

रँगीली महल
बरसाना, जिला-मथुरा-२८१४०५
(यू.पी.) इण्डिया फोन: ०५६६२-२४६२३५

www. jagadgurukripaluparishat.org (jkp.org)

द्वितीय संस्करण : गुरुपूर्णिमा, ११ जुलाई, २००६

सर्वाधिकार सुरक्षित © २००६

राधा गोविन्द समिति, नई दिल्ली

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी रूप में
इलैक्ट्रानिक, यांत्रिक, फोटोग्राफिक अभिलेखन अथवा अन्य किसी भी प्रकार से प्रतिलिपि अथवा प्रसारित न किया जाय।

प्रकाशक:

राधा गोविंद समिति

गोलोक धाम

एच. ए. एफ. (बी), पार्ट-१, सैक्टर-१०, द्वारका, नई दिल्ली-११००७५ फोन: ०११-२५०८१०८८
e-mail: rgs108del@yahoo.com

Scanned by CamScanner

वृषभानुनन्दिनी रासेश्वरी
श्री राधारानी के प्रेमरस सार
स्वरूप विग्रह का
सांगोपांग चित्रण अत्यन्त ही
आकर्षक एवं अनूठे
ढंग से किया गया है।
इसमें १३ पद हैं।
प्रत्येक पद में मधुरातिमधुर
प्रेम रस धारा प्रवाहित हो रही है जो
श्री राधारानी के रूपध्यान
के लिए परम सहायक है।
अतः भक्ति मार्गीय प्रत्येक साधक
के लिए परम उपयोगी है।

Scanned by CamScanner

१.

हमारी गौर वरनि सरकार।
पिय चित चोरी भानु किशोरी, अति भोरी रिझवार।
तनु दुति तप्त स्वर्ण दुति ते हूँ, अति उद्दीप्त निहार।
श्री श्रीअंग दिव्य सौरभ ते, सुरभित नन्दकुमार।
श्री श्रीअंग मृदुलता लखि दउँ, कोटि मृदुलता वार।
कह 'कृपालु' श्री अंग अंग लखि, पिय सुधि देह बिसार॥

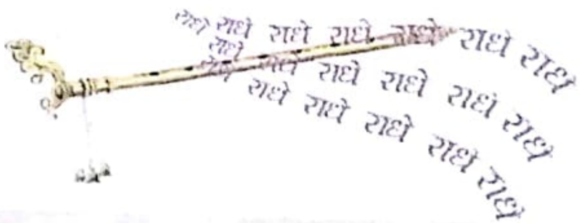

Scanned by CamScanner

भावार्थः स्वामिनी श्री राधा जू गौर वर्ण वाली हैं। प्रियतम श्यामसुन्दर के चित्त को चुराने वाली वृषभानुनन्दिनी अत्यन्त ही भोली भाली हैं। उनके शरीर की कान्ति तपाये हुए स्वर्ण से भी अधिक दीप्तिमती है। उनके श्रीअंग अंगों की दिव्य गन्ध से नन्दनन्दन भी सुगन्धित हो गये। श्री राधा के अंगों की कोमलता को देखकर करोड़ों कोमलताओं को भी न्यौछावर किया जा सकता है। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि श्री राधा के प्रत्येक अंग को देखकर श्री कृष्ण भी आत्म विस्मृत हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

२.

छबीली छबि, लखि छबि मानी हार।
छवि साकार खरी कर जोरे, सेवत भानु दुलार।
चँवर ढुरावे सुकुमारी ढिंग, सकल कला साकार।
प्यारी सेवा में रह तत्पर, दिव्य प्रभा तनु धार।
अगनित रति आरती उतारें, करि करि जय जयकार।
इक टक लखत 'कृपालु' लाल जू, निज सुधि देह बिसार।

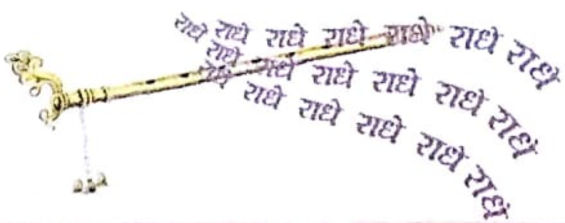

Scanned by CamScanner

भावार्थः छवि की खान श्री राधा का दर्शन कर साक्षात् छवि भी पराजित हो गई। मूर्तिमती छवि हाथ जोड़े भानुनन्दिनी की सेवा में खड़ी रहती हैं। समस्त कलायें साकार रूप धारण कर सुकुमारी राधिका के ऊपर चँवर ढुलाती रहती हैं। दिव्य प्रभा साकार रूप धारण कर प्रिया राधा की सेवा में तल्लीन रहती है। असंख्यों रति जय जय का शब्द उच्चारण करती हुई राधा मुख-कमल की आरती उतारती हैं। श्री 'कृपालु जी' के शब्दों में श्री श्यामसुन्दर अपनी देह सुधि को भूलकर निर्निमेष नयनों से राधा-सौन्दर्य-सुधा का पान करते हैं।

Scanned by CamScanner

३.

किशोरी जू की, अद्भुत, छवि बलिहार।
चम्पक वरनि गौर तनु अद्भुत, रूप माधुरी सार।
अंग अंग सुन्दरता अद्भुत, अगनित रति दउँ वार।
उनकी चितवनि मुसुकनि अद्भुत, गवनि हंस रिझवार।
उनकी गति मति रति अति अद्भुत, मोहति नंदकुमार।
सब 'कृपालु' अद्भुत अति अद्भुत, अद्भुत मानी हार।

Scanned by CamScanner

भावार्थः एक सखी दूसरी सखी से कहती हैं– श्री राधिका का आश्चर्य युक्त रूप देखते ही बनता है। श्री राधा के शरीर का वर्ण चम्पा पुष्प के समान है। श्री राधा का यह गौर वपु अद्भुत रूप माधुर्य का सार स्वरूप ही है। श्री राधा के प्रत्येक अंग के सौन्दर्य पर असंख्यों रति को न्यौछावर किया जा सकता है। उनकी चितवन एवं मुस्कान अत्यन्त ही अनूठी है। श्री राधा की मदमाती चाल को देखकर हंस भी लज्जित हो जाते हैं। वृषभानुनन्दिनी की गति, मति एवं रति अनोखी ही है जिससे वे अपने प्रियतम को मुग्ध कर लेती हैं। श्री 'कृपालु जी 'कहते हैं– श्री राधा का सभी कुछ विलक्षण है। स्वयं अद्भुत भी उनके समक्ष पराजित हो गया।

Scanned by CamScanner

४.

पंचमणि मंडित भानुदुलार।

शरणागत पतितन हित श्यामा, चिंतामणि अनुहार।

ब्रज की ब्रज - गोपिन हित श्यामा, चूड़ामणि बलिहार।

श्री वृषभानु कीर्ति हित श्यामा, कुलमणि तनु साकार।

श्याम विरह ज्वाला हित श्यामा, देह शान्तिमणिधार।

केलि कुंज, भूषण मणि श्यामा, मंजु निकुंज मझार।

कह 'कृपालु' मम उर सम्पुट मणि, महँ विहरहु सुकुमार।

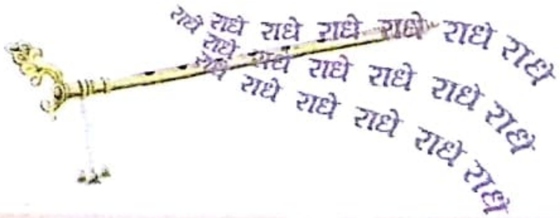

Scanned by CamScanner

भावार्थ: भानुदुलारी श्री राधा पाँच प्रकार की मणियों से अलंकृत हैं। जो पतित जन उनकी शरण ग्रहण कर लेते हैं उनकी सम्पूर्ण चिन्ताओं का हरण करने वाली श्री राधा चिन्तामणि के समान हैं। ब्रजगोपियों की चूड़ामणि स्वरूपा श्री राधा सभी श्री कृष्ण कान्ताओं में मूर्धन्य हैं। पिता वृषभानु एवं माता कीर्ति के लिये उनकी पुत्री राधा उनकी कुलमणि का साकार स्वरूप हैं। प्रियतम श्यामसुन्दर की विरह ज्वाला को शान्त करने के लिये श्री राधा मूर्तिमती शान्ति मणि हैं। सुन्दर निकुंजों के मध्य में वे मधुर क्रीड़ा कुंज की मणिस्वरूपा हैं। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि हे सुकुमारी राधे! मेरे हृदय-सम्पुट मणि में आप विहार करें।

Scanned by CamScanner

५.

चातुरी पाँच गौर सरकार।
एक चातुरी भ्रूनर्तन की, जेहि लखि पिय बलिहार।
एक चातुरी नैन बान की, तिरछी बरछी धार।
एक चातुरी मृदु बोलनि की, मोहति नंदकुमार।
एक चातुरी केलि-कला की, प्रकटति रास मझार।
एक हास-परिहास चातुरी, सखियन संग निहार।
कह 'कृपालु' धरि रूप चातुरी, सेवत भानुदुलार।

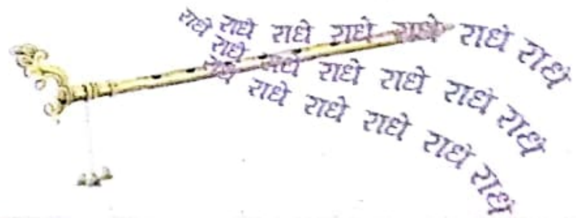

Scanned by CamScanner

भावार्थः गौरांगी स्वामिनी राधा पाँच प्रकार की दक्षता से पूर्ण हैं। प्रथम दक्षता तो नृत्य-काल में उनके भ्रूनर्तन की है, जिसे देखकर उनके रसिक प्रियतम उन पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हैं। दूसरी दक्षता उनके तिरछे कटाक्षपातों की है जो प्रियतम के हृदय को घायल करने के लिये बरछी का कार्य करते हैं। तीसरी दक्षता उनकी मधुर वाणी की है जिससे मुग्ध हुए प्रियतम के श्रवण उनके मृदु वचन सुनने को सदा आतुर रहते हैं। रास क्रीड़ा के मध्य चौथी दक्षता रति कला की है। सखियों के साथ उनके हास परिहास की दक्षता भी देखने योग्य है। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि दक्षता साकार रूप धारण कर श्री राधा की सेवा में रत हैं।

Scanned by CamScanner

६.

किशोरी जू की, छवि लखि गई बलिहार।
छवि सौन्दर्य सार रस पिय नित, नागर नन्द कुमार।
इकटक लखन चहत दृग फिसलत, तनु ते बारम्बार।
रूप अगाधा राधा की छवि, प्रेम सुधा रस सार।
अगनित विद्युल्लता निछावर, छवि प्रतिबिम्ब निहार।
छवि प्रतिबिम्ब 'कृपालु' देखि हौं, चन्द्र अमित दउँ वार।

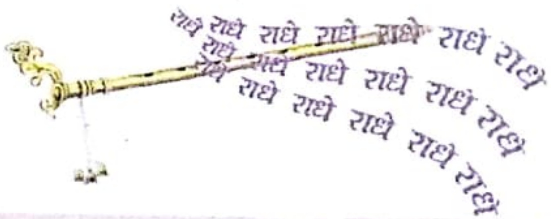

Scanned by CamScanner

भावार्थः मैं भानु किशोरी श्री राधा की छवि पर बलिहार जाती हूँ। श्री राधा के सौन्दर्य के सार का रस पान तो निरन्तर उनके चतुर प्रियतम नन्दनन्दन ही कर पाते हैं। श्री कृष्ण के नेत्र जब प्रिया राधा की रूपमाधुरी को निर्निमेष होकर निहारना चाहते हैं, तब वे बड़भागी नेत्र श्री राधा को स्नेहयुक्त देह से फिसल पड़ते हैं। अगाध रूप से परिपूर्ण श्री राधा की छवि के प्रतिबिम्ब मात्र पर असंख्यों दामिनियों को न्यौछावर किया जा सकता है। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि श्री राधा की छवि के प्रतिबिम्ब मात्र पर मैं असंख्यों चन्द्रों को वार दूँ।

Scanned by CamScanner

७.

श्यामा जू हैं, सात सिन्धु की सार।
एक सिन्धु वैदग्ध्य सिन्धु है, कला विलास प्रकार।
एक सिन्धु अनुराग सिन्धु है, मादन भाव निहार।
एक सिन्धु वात्सल्य सिन्धु है, दीनन हित सरकार।
एक सिन्धु है कृपा सिन्धु जो, सुनत प्रपन्न पुकार।
एक सिन्धु लावण्य सिन्धु है, पिये सतत रिझवार।
एक सिन्धु है केलि सिन्धु जो, रिझवत नन्दकुमार।
एक सिन्धु है रूप सिन्धु जो, रसिकन प्राणाधार।
सप्त सिन्धु की ज्यों 'कृपालु' भू, त्यों वृषभानु दुलार।

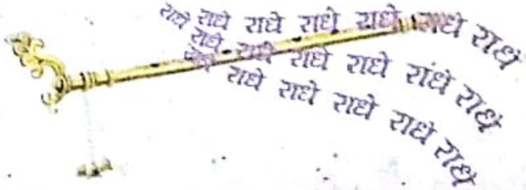

Scanned by CamScanner

भावार्थः श्री राधा का दिव्य वपु मानो सप्त सिन्धु का सार ही है। अनेक प्रकार की विलास कलाओं का वैदग्ध्य सिन्धु प्रथम है। दूसरा मादनाख्य महाभाव का अनुराग सिन्धु है, जिससे प्रेमी नन्दनन्दन सदैव ही प्रिया राधा के वशीभूत रहते हैं। दीन जनों के हित श्री राधा उर में विलोडित सिन्धु तीसरा सिन्धु है। शरणागत जीवों का क्रन्दन श्रवण करने हेतु श्री राधा के हृदय में कृपा सिन्धु भी सदैव हिलोरें लेता रहता है। पाँचवाँ लावण्य सिन्धु है, जो रसिक शेखर श्री कृष्ण की रूप-रस-पान की तृष्णा को सदा अक्षुण्ण रखता है अर्थात् रूप रस पान करते हुए भी वे अतृप्त बने रहते हैं। श्री राधा में स्थित केलि सिन्धु उनके प्रियतम को सदा रस विवश किये रहता है। श्री राधा का रूप सिन्धु तो रसिकों के प्राणों का आधार ही है। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि इस प्रकार से भानुनन्दिनी सातों समुद्रों से युक्त पृथ्वी के समान ही हैं।

Scanned by CamScanner

८.

किशोरी तनु दुति पर दुति बलिहार।
सिर ते मुकुट मणिन मोतिन दुति, परत लिलार मझार।
बिन्दी लाल भाल दुति दमकति, कुण्डल दुति रिझवार।
बिन्दी कुण्डल मुकुट दमक मिलि, परत कपोल निहार।
इत मुक्ताहल नथ बेसर मिलि, करति रंग बौछार।
रंग बिरंगी मणिन मोतियन, दमकत गल बिच हार।
पहुँची बाजूबन्द मणिन दुति, दमकति विविध प्रकार।
इत किंकिनि नूपुर बिछुवनि दुति, मोहति नन्दकुमार।
कह 'कृपालु' सब दुति मिलि मानहुँ, दुति मूरति साकार।

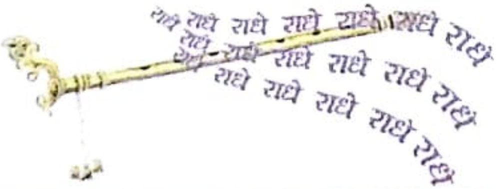

Scanned by CamScanner

भावार्थः श्री राधा की अंग कान्ति पर स्वयं कान्ति भी बलिहार जाती है। सिर से मुकुट के मणि एवं मुक्ताओं का प्रकाश मस्तक के ऊपर पड़ रहा है। अरुण वर्ण की बिन्दी की चमक मस्तक पर पड़ रही है। उधर कुण्डलों का भी प्रकाश है। बिन्दी, कुण्डल एवं मुकुट तीनों की प्रभा गोल कपोलों पर पड़ रही है। कण्ठ के मध्य हार हिल रहे हैं। उनमें जड़ी हुई रंग बिरंगी मणियाँ एवं मुक्ता चमक रही हैं। हाथों की पहुँची एवं भुजाओं के बाजूबन्दों की मणियाँ नाना भाँति से दमक रही हैं। कटि की करधनी, चरणों के नूपुर एवं पदों की अँगुलियों के बिछुए अपने प्रकाश से नन्दनन्दन को आकर्षित कर रहे हैं। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि यदि इन सभी दुतियों को सम्मिलित कर दिया जाय तो श्री राधा दुति की साकार प्रतिमा सी प्रतीत होती हैं।

Scanned by CamScanner

९:

किशोरी सिर शीशफूल बलिहार

गुम्फित सुमन सुघर वेणी की, लटकनि छवि छविदार।
गिरि जमुनोत्री से जैसे गिर, जमुना जू की धार।
जगमग जगमग जगमगात अति, कनक मुकुट रिझवार।
ऊपर ते चन्द्रिका चमक लखि, इन्द्र धनुष दउँ वार।
उत 'कृपालु' सिन्दूर अरुणिमा, मोहति नन्दकुमार।

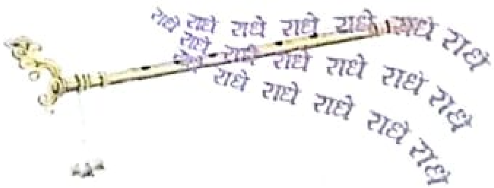

Scanned by CamScanner

भावार्थः मैं भानुनन्दिनी श्री राधा के शिरोभाग पर आरूढ़ शीशफूल पर बलिहार जाता हूँ। पुष्पों सहित गुँथी हुई सुन्दर वेणी की लटकने की छवि अत्यन्त मनोहर है। पृष्ठ भाग पर लटकी हुई वेणी ऐसी प्रतीत होती है मानो यमुनोत्री पर्वत से श्री यमुना की धारा नीचे गिर रही है। रसिकों के मन को मोह लेने वाला स्वर्ण का मुकुट मस्तक पर जगमग-जगमग जगमगा रहा है। मुकुट की चन्द्रिका की दीप्ति पर इन्द्रधनुष को न्यौछावर किया जा सकता है। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि श्री राधा के सीमन्त के सिन्दूर की लालिमा लाल के प्रेमी मन को मोहित कर लेती है।

Scanned by CamScanner

१०.

श्यामा जू के श्री मुख पर बलिहार।
चिन्मय दिव्य कोमल मुख लखि हों, मुरछित नन्दकुमार।
विकसित आनन्द मोद पुष्प जनु, श्री मुख भानुदुलार।
मुख अरु कुण्डल कान्ति मिलित छवि, चन्द्र सूर्य अनुहार।
वेणी अनियारी घुंघरारी, गुम्फित कुसुम निहार।
जनु 'कृपालु' घन श्याम चन्द्र मुख, छवि पर करत विहार।

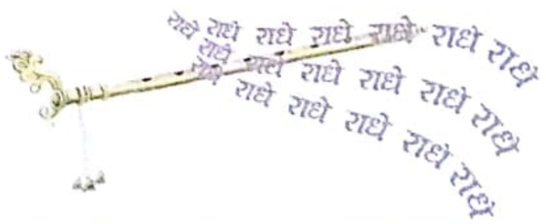

भावार्थः श्यामसुन्दर कहते हैं कि मैं किशोरी राधा के श्री मुख पर बलिहार जाता हूँ। श्री राधा के दिव्य चिन्मय कमल के समान आनन पर कामदेव को मोहित कर लेने वाला मैं साक्षात् श्री कृष्ण भी मूर्च्छा को प्राप्त हो जाता हूँ। भानुनन्दिनी का श्री मुख मानो आनन्द एवं प्रसन्नता का विकसित कुसुम ही है। मुख और कुण्डल की कान्ति मिल कर चन्द्र और सूर्य का रूप धारण कर रही है। मुख की आभा चन्द्र के समान एवं कुण्डलों की कान्ति साक्षात् सूर्य ही है। घने घुँघराले केशों की वेणी में पुष्प भी गूथे गये हैं। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं- ऐसा प्रतीत होता है कि काले केश नीले बादलों के समान राधा के चन्द्रानन पर छाये हुए हैं।

Scanned by CamScanner

११.

किशोरी जू को इकटक लख रिझवार।
सिर पर मुकुट चन्द्रिका तापर, बंदनि गौर लिलार।
बिन्दी भाल लाल लाली के, शोभा सिन्धु अपार।
जनु बन्धूक पुष्प सों पूज्यो, सखि मुख चन्द्र निहार।
वेणी लट तट भृकुटि लटक भल, लखत बनत बलिहार।
मन मोहन मन मीन फंसावनि, हित जनु वंशी धार।
दृग उज्ज्वल आकर्ण चपल अति, मोहित नन्दकुमार।
दृग विशाल जनु कह 'कृपालु' कछु, कानन कान मझार।

Scanned by CamScanner

भावार्थः रसिक प्रियतम कृष्ण प्रिया राधा के रूप का दर्शन निर्निमेष नेत्रों से करते हैं। सिर पर मुकुट पर चन्द्रिका है। गौर वर्ण के ललाट पर बन्दनी शोभा पा रही है। लाड़िली के भाल पर अरुण वर्ण का सिन्दूर बिन्दु शोभा का अपार समुद्र ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि सखियों ने इस श्री मुख को चन्द्र समझ कर बंधूक के लाल वर्ण के पुष्प द्वारा इसकी पूजा की है। वेणी की एक लट भृकुटि के ऊपर लटक रही है। यह काली लट उस वंशी के समान है जो प्रियतम के मन रूपी मछली को फँसाने के हेतु श्री राधा ने धारण की है। उज्ज्वल कर्ण पर्यन्त नेत्र अति चंचल हैं जिनसे नन्दनन्दन मुग्ध रहते हैं। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि विशाल नेत्रों को देखकर भ्रम होता है कि ये कानों के कान में कुछ कहना चाहते हैं।

Scanned by CamScanner

१२.

गौर तनु, चिदानन्द बलिहार।
अगणित चन्द्र सिन्धु मन्थन करि, निकसे जो रस सार।
मथि रस सारहुँ सार तत्व सो, कान्ति गौर सरकार।
चिन्मय दिव्य गौर तनु दुति जनु, दामिनि दिव्य निहार।
नागरि तनु दुति लखत गिरत नट, नागर धरणि मझार।
रति रस नागरि गुण आगरि पर, अगनित रति दउँ वार।
कह 'कृपालु' तनु रोम रोम ते, बह ब्रजरस की धार।

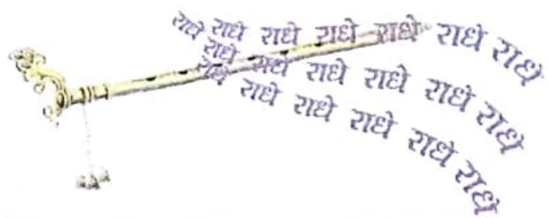

भावार्थः श्री राधा के सच्चिदानन्दमय शरीर पर मैं बलिहार जाता हूँ। सागर मन्थन के पश्चात् रस के सार स्वरूप मानो असंख्यों चन्द्र प्रकट हुये हों। उस रस के सार रूप चन्द्रों को मथ कर जो सार तत्व प्राप्त हो, ऐसी दिव्य कान्ति श्री राधा के अंगों की है। राधा के दिव्य चिन्मय गौर अंगों की कान्ति दिव्य विद्युत के समान है। नागरी राधा के तन की आभा को देख कर नागर कृष्ण पृथ्वी पर बेसुध होकर गिर पड़ते हैं। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं कि श्री राधा के रोम-रोम से ब्रजरस का अखण्ड प्रवाह निःसृत होता रहता है।

Scanned by CamScanner

१३.

श्यामा जू की, छवि पर छवि बलिहार।
सिर पर कनक मुकुट मणि मण्डित, बहुरंगी छविदार।
चारु चन्द्रिका चम चम चमकति, स्वामिनि गौर लिलार।
बिन्दी भाल लाल श्रुति कुण्डल, झलमल झलक निहार।
नासा मुक्ताहल नथ बेसर, गल मुक्तन मणि हार।
चिबुक श्याम तिल मुख मृदु मुसकनि, कटि किंकिन झनकार।
अरुण कंचुकी नीलाम्बर दुति, सुवरन जरिन किनार।
कह 'कृपालु' मिलि गौर देह दुति, करति रंग बौछार।

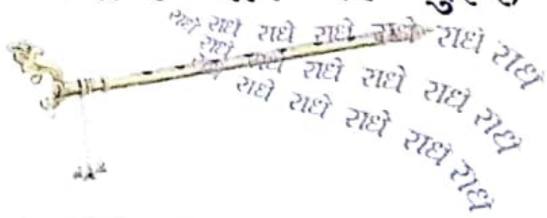

Scanned by CamScanner

भावार्थः किशोरी राधिका की छवि को देख कर छवि भी स्वयं को न्यौछावर कर देती है। विविध रंगों के मणियों से मण्डित स्वर्ण का मुकुट सिर पर शोभायमान है। स्वामिनी राधिका के गौर ललाट पर सुन्दर चन्द्रिका चमचमा रही है। मस्तक पर लाल रंग का सौभाग्य चिह्न एवं कानों में कुण्डल झलमला रहे हैं। सुघर नासिका में नथ एवं बेसर का मोती अपनी अनूठी आभा प्रसारित कर रहा है। कण्ठ में मुक्ता एवं मणियों के हार झूल रहे हैं। सुन्दर ठोढ़ी पर श्याम रंग का तिल शोभित है। मुख मन्द मुसकान से युक्त है। क्षीण कटि किंकिणी से झंकृत है। वक्ष पर अरुण वर्ण की अंगिया अलंकृत है। स्वर्णिम जरी की किनारी से युक्त नीली साड़ी से अधो अंग आवृत्त है। श्री 'कृपालु जी' कहते हैं–गौरांगी राधा की देह दुति रंगों की बौछार सी कर रही है।

Scanned by CamScanner

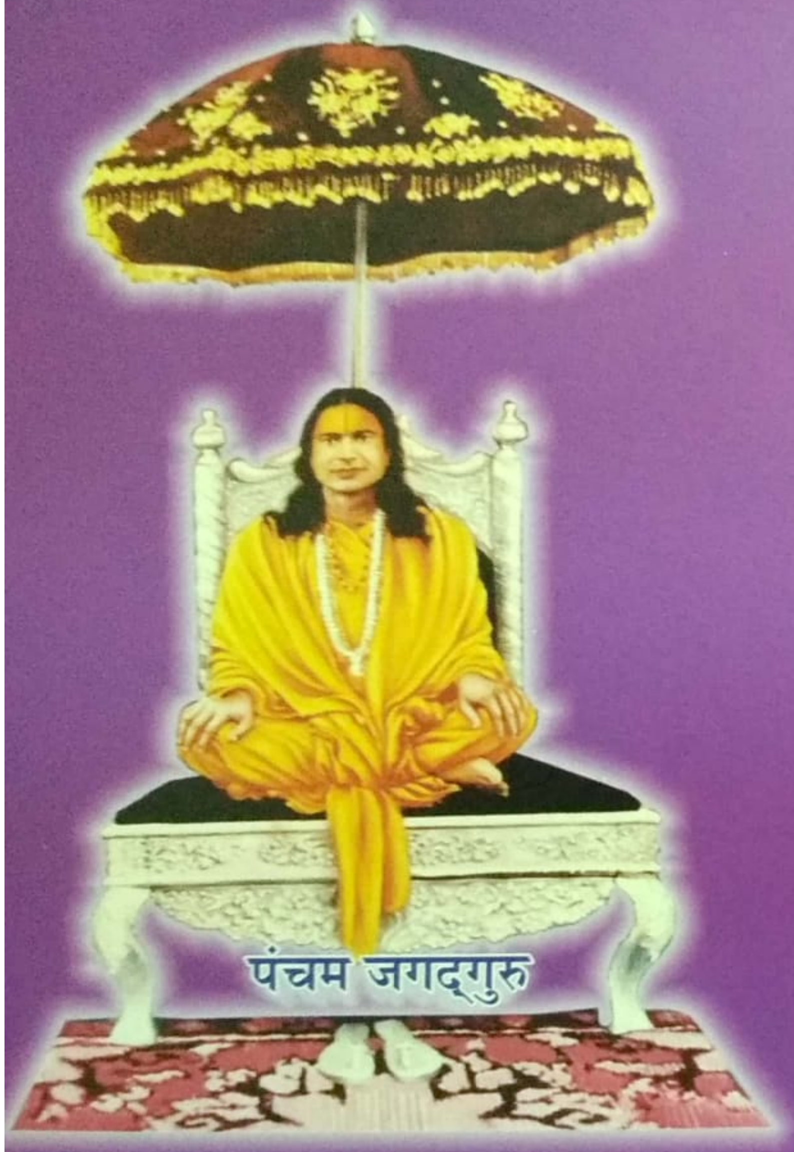

(१४ जनवरी १९५७)

वर्तमान काल में **जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज** विश्व के इतिहास में पंचम जगद्गुरु हैं। ये समन्वयवादी जगद्गुरु हैं; अतएव ये पूर्ववर्ती समस्त आचार्यों **जगद्गुरु श्री शंकराचार्य, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य, जगद्गुरु श्री रामानुजाचार्य, जगद्गुरु श्री माध्वाचार्य एवं श्री चैतन्य महाप्रभु** के दार्शनिक सिद्धान्तों को सही सिद्ध करते हुये अपना समन्वयवादी दार्शनिक सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं। इनके मतानुसार यद्यपि ईश्वर प्राप्ति के अनेक मार्ग हैं तथापि भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वसुलभ मार्ग है, प्रत्येक जीव का लक्ष्य **'स्वसुखवासना गन्ध लेश शून्य श्री कृष्ण सुखैकतात्पर्यमयी सेवा'** ही है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु श्रवण, कीर्तन, स्मरण तीन प्रकार की प्रमुख भक्ति करनी होगी।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner